अध्याय-4

मॉरीशस को हिंदी कहानियाँ : एक परिचय

मॉरीशस म कहानी का प्रारंभिक स्थिति पर द्रष्टिपात करे तो, वहां भी हम मौखिक कहानिया को देखना होगा। मॉरीशस म अप्रवासी भारतीय दादा-दादी, नाना-नानी, तन-तोड़ मेहनत के बाद अपने घरा म आते थे और बच्चा को कहानियाँ सुनाते थे, इन कहानिया म पूवजा का कहानियाँ अपने परिवार और स्वजना का कहानियाँ होती थी या अपनी त्रासदी भरी, वेदना भरी कहानियाँ होती थी. कभी मनोरंजन, तो कभी साहस, वेदना और पीडा से एक नई प्रेरणा प्रदान करनेवाली कहानियाँ मिलती था।

भारतीय मूल के लोग अपने साथ 'रामचरित मानस', 'हनुमान चालीसा', 'आल्हा खंड' तथा 'सत्यानारायण का कथाएं' अपने साथ लाये थे। "विपत्ति-काल म अपने धम तथा अपनी भाषा-संस्कृति का रक्षा हेतु, उन कथाओं से उन्ह उजा मिलती थी। 'आल्हा' तथा 'हनुमान चालीसा' से अत्याचारिया के विरुद्ध जाने का वीर भावना उनम उत्पन्न होती थी। कभी कभार कुली-मजदूरा का, सरदार-मालिका के प्रति अभिव्यक्ति, विरोध-विद्रोह तथा उनके मन म जलती प्रतिरोध का चिनगारी म इन कथाओं का अज्ञात-अचेतन प्रभाव अवश्य रहता था। दु:ख के क्षणा म 'बिरहा' म अपनी दु:ख-भरी मामिक कथाओं का सामूहिक रसोद्रेक, एक कहानी ही तो होती थी"(1) मनोरंजक, प्रेरणादायक और साहसी कथाओं के साथ शिक्षाप्रद कहानियाँ भी मिलती थी।''पुरानी कहानिया म 'कुंवर विजयमाल', 'बहत दिन हए', 'हातिमताई', 'रानी सारंगा', 'हंसता पान', 'हंसता ठग', 'खोज जीरान्ते', 'राकस भइया आंगने म ठार', 'उड़न छू घोड़ा', 'दुलाटी वदन', 'सोनवा रानी', 'तेला का बेट', 'सबुर राजा', काली चिडिया', 'लाला परी', 'अनारकली' घर-घर रात्रि को सुनायी जाती थी। इन कहानिया म मनोरंजन के साथ ही साथ शिक्षा और उपदेश भी भरे पड़े रहते थे। इन कहानिया के पात्र प्राय: देवी-देवता, राजा-रानी, देव-दानव, भूत-प्रेत, पशु-पक्षी, पेड-पौधे, राक्षस, जादुगर, परी आदि हआ करते थे।"(2)

➢ **लिखित कहानी-**

मॉरीशस म लिखित कहानिया को अलग-अलग देखा जा सकता है।

1. पत्र-पत्रिकाओं म छपी कहानियाँ
2. सामूहिक 'संकलन' के रूप म छपी कहानियाँ
3. व्यक्तिगत 'संग्रह' के रूप म छपी कहानियाँ
4. बाल-कहानियां

प्रथम कहानी

मॉरीशस के हिन्दी साहित्य म हिन्दी कहानी कौन-सी प्रथम मानी जाय इस संदभ म जब देख तो डॉ. हरदयाल ने इस संदभ म लिखा है- “अनबोलती चिड़िया’ नामक वली मोहम्मद की यह कहानी सन् १९२२ म प्रकाशित हई थी। इस काल म (सन् १९०० से १९३६ तक) ऐसी कहानी दूसरी नहीं देखी जाती। इसलिए हिन्दी साहित्य की प्रथम कहानी इसे मान लेने म कोई हज नहीं होगा।”(3) जब कि प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल का मानना है- “मॉरीशस की प्रथम कहानी मॉरीशस म नहीं, मॉरीशस के बहार किसी मॉरिशसीय के द्वारा लिखी गयी है. वह कहानी डी.ए.बी. कॉलेज, लाहौर की ‘निझर’ पत्रिक म ‘लुईज’ नाम से सन 1933के अंत और 1934 के प्रारंभ म लिखी गयी है.”(4) यही बात अभी तक पुष्टि नहीं हो पायी है। ‘सनातन धमाक’ के तीन अंकों म प्रकाशित पं. तपेश्वरनाथ चतुवदी की कहानी ‘इन्दो’ मॉरीशस हिन्दी- साहित्य की ‘प्रथम’ कहानी है.

हिंदी कहानी का काल विभाजन-

1. प्रारंभिक काल - सन 1933 से 1960 ई. तक
2. मध्यकाल - सन 1960 से 1968 ई. तक
3. आधुनिक काल – प्रथम चरण – सन 1968 से सन 1976 तक
   द्वितीय चरण –1976 से अब तक

1. प्रारंभिक काल – (सन 1933 से 1960 तक)

मॉरीशस के हिन्दी साहित्य का कहानी साहित्य म प्रारंभिक अवस्था की ओर दृष्टिपात करे तो वहां पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से कहानियों का प्रकाशन होता था। प्रारंभिक काल म राजनीतिक-सामाजिक-धामिक परिस्थितियों का चित्रण कहानियों म हआ।

‘सनातन धमाक’ पत्रिका के माध्यम से हिन्दी कहानी का प्रारंभ मान सकते ह । ‘सनातन धमाक’ पत्रिका का प्रारंभिक काल म सवाधिक महत्व है. इस पत्रिका के माध्यम से ‘इन्दो’ नामकी मॉरीशस की सबसे पहली कहानी हम प्राप्त हई और मॉरीशस के अन्य कहानीकारों की रचनाएं भी हम उपलब्ध होती है. इस वजह से भी ‘सनातन धमाक’ पत्रिका का मॉरीशस हिन्दी साहित्य के इतिहास म महत्व रहा है।

‘इन्दो’ पं. तपेश्वरनाथ चतुवदी द्वारा रचित एक सामाजिक कहानी है. इस कहानी म परिवेश मॉरीशस नहीं है बल्कि भारतीय है. किन्तु कहानी की भाषा शैली, कथा एवं उसका शिल्प अति समृद्ध है। कहानी कला तत्वों के आधार पर भी यह एक सफल कहानी मानी जा सकती है। ‘इन्दो’ कहानी म समाज म व्याप्त अमीरी-गरीबी का भेदभाव, दहेज-प्रथा, तथा समाज की विकृतियां जिसे कहानी के माध्यम से उजागर किया है।

सनातन धमाक’ पत्रिका म पं. जयप्रकाश शमा की ‘तारा’,‘ब्राह्मण’ ‘सुमहेशनंदन कौशिक’ की कहानी ‘अभागिन’ तथा ‘इन्दुभूषण’(सूयमंगर भगत) की कहानी ‘वह चला गया’ आदि कहानीकारों की प्रमुख कहानियाँ प्रकाशित हई। उस वक्त सामाजिक समस्याएं पनप रहीं थीं| उन्हीं को कहानी के विषय बनाते

हए तत्कालीन समाज के चित्र को प्रकाशित किया। धम के नाम पर पाखंड, दहेज, अंध विश्वास तथा नारी को अवदशा के स्वर को कहानी म वाचा दी है।

- **दुगा पत्रिका का योगदान :-**

मॉरीशस के हिन्दी प्रेमी सूयप्रसाद मंगर भगत तथा अन्य सहयोगी साथियाें के प्रयास से 'दुगा' नामक हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन हआ. सन 1935से 1937 तक 'दुगा' नामक हस्तलिखित पत्रिका का प्रकाशन हआ. "इस पत्रिका म सूयप्रसाद मंगर भगत तथा केशवदेव, हरिलाल सहित सभी छद्मनाम से लिखिते थे. इसम वासुदेव शम्भु, सत्यदेव आदि तथा अन्य कहानीकाराें को कहानियाँ प्रकाशित हई."(5)

- **'आय पत्रिका' :-**

मॉरीशस के 'आय पत्रिका' म लेखाें, कविताओं के साथ कहानियाें को भी स्थान मिला. श्री जयनारायण राय एक प्रभावशाली लेखक थे। वे अंग्रेजी, फ्रेंच और हिन्दी भाषा म जीवन भर लिखते रहे. उनको तीन कहानियाँ - 'आनंद को ओर', 'आशीवाद', 'और एक ही आशा' नामक तीन कहानियाँ प्रकाशित हई। 'जागृति' हिन्दी पत्रिका म सन1940से सन1943 तक कई कहानीकाराें को कहानियाँप्रकाशित हई। इन कहानीकाराें म पं.यदुनंदन शमा, देवदत्त शमा, शिव गोविंद शमा, वसु शैलेश नंदन, सूयप्रसाद मंगर भगत, सुरेशचंद्र (सोमदत्त बखौरी का छद्मनाम) तथा अन्य लेखकाें को रचनाएं भी सामने आई है। इसी काल म पं.वासुदेव विष्णुदयाल का सवश्रेष्ठ योगदान रहा था। सन 1953-54 म 'वतमान' पत्रिका के प्रकाशन हआ छद्मनाम मुनेशचंद्र(मुनीश्वरलाल चिंतामणि) तथा छद्मनाम धारी परशुराम शमा(असली नाम अज्ञात) को कहानियाँ प्रकाशित हई. मुनीश्वरलाल चिंतामणि को कहानी 'आदश पिता' और 'धमवीर को उदारता' प्रकाशित हई, सन् 1957 म 'मजदूर' पत्रिका म तीन कहानियाँ प्रकाशित हई वह है- 'सुख और दु:ख किसे कहते है, 'जब से मधु शराब पीने लगा है' लेकिन बिना लेखक के नाम को छपी। सन 1933 से 1960 तक के प्रारंभिक काल म युगीन परिस्थितियां सनातनी तथा आय समाजी खंडन-मंडन को प्रवृत्तियाें का चित्रण, पाखंड़, अंध विश्वासाें, पाखंड़ाें को स्थितियाें का चित्र प्रस्तुत हआ है।

2. **मध्यकालीन कहानी - (सन् 1960 से 1968 ई. तक)**

सन1960 म मॉरीशस म तीन हिन्दी पत्रिकाओं का आगमन हआ। 'अनुराग', 'समाजवाद', 'नवजीवन' पत्रिकाओं के आगमन के साथ ही साहित्य के क्षेत्र म साहित्यिक नवजीवन का संचरण हआ। 'अनुराग' पत्रिका के माध्यम से ही मॉरीशस के सुप्रसिद्ध कथाकार अभिमन्यु अनत का कहानी के क्षेत्र म पदापण हआ। रामदेव धुरंधर, धमवीर धूरा, जागासिंह दीपचंद बिहारी आदि कहानीकाराें का भी पदापण हो गया।

मध्यकाल म कहानियाें का प्रकाशन विभागाें म देखा जा सकता है.

1) मॉरीशस पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित कहानियाँ
2) भारतीय पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित कहानियाँ

3) संकलन के रूप म

(१.) मॉरीशस पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित कहानियाँ:-

संपादक पंडित दौलतराम शमा ने यदि 'अनुराग' पत्रिका को प्रकाशित किया उसी के साथ अभिमन्यु अनत जी ने अपनी पहली कहानी 'टूटी प्रतिभा' को जन्म दिया। अनुराग के द्वितीय अंक म कहानीकार राजेन्द्र शमा को 'बावला' तथा नंदलाल प्रेमी को 'मनोहर' कहानी प्रकाशित हई। अनुराग के अलावा मॉरीशस म श्री.डी.पी नेपाल द्वारा सम्पादित 'समाजवाद' पत्रिका (1960) म छद्मनामी कहानीकारों को कहानियाँ अधिक छपी। 'नवजीवन' पत्रिका आई इस पत्रिका म श्री मोती तोरल, बेणीमाधव, रामखेलावन, केशवदत्त चिंतामणी को कहानियाँ सामने आई। 'कांग्रेस' पत्रिका सन (1964-67) म कई अंक प्रकाशित हई| उसम परिचित और अपरिचित कहानीकारों को कहानियाँ आई| रामदेव धुरंधर को 'नेता' (1967) जागासिंह 'बेचारी गौरी' (१९६७) अधिकतर चिंतामणी जी को कहानियाँ प्रकाशित हई। उनको प्रमुख कहानियों म 'वसंत को रोटी', 'निधन साहित्यकार', 'समाज के मोती' और 'मॉरीशस भूषण' आदि।

(२.) भारतीय पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित कहानियाँ:-

मॉरीशस के हिन्दी साहित्य को कहानियों का भारत तक विस्तार हो गया। इस युग म एक मात्र कहानीकार अभिमन्यु अनत को कहानियाँ भारत को विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित हई। पहली कहानी 'लहर कराह उठी' 'रानी' पत्रिका (जून १९६५) म प्रकाशित हई। इसी प्रकार 'अवलम्ब' (दिसम्बर १९६५) 'कहानी' पत्रिका म तथा 'विजय बंधन' (दिसम्बर १९६५) म प्रकाशित हई। उनको 'जीत' नाम को उदू कहानी 'शमा' पत्रिका म तथा 'जीत' कहानी हिन्दी म 'सुषमा' पत्रिका जुलाई १९६६ म प्रकाशित हई।

(३.) संकलन के रूप म प्रकाशित कहानियाँ:-

मॉरीशस के कहानी साहित्य म पत्रिकाओं का विशेष रूप से योगदान रहा है. 'नये अंकुर' १९६७ के सामूहिक संकलन म छ: कहानीकारों को कहानियाँ प्रकाशित हई। 'मॉरीशस -हिन्दी-लेखक-संघ' के सहयोग से प्रकाशित हई। मुनीश्वर चिंतामणि को कहानी 'दारुण अभिशाप', मोती तोरल को 'मनौती', हरिनारायण सीता को 'अंजनी', केशवदत्त चिंतामणी को 'प्रतीक्षा', इंद्रदेव भोला को 'अनाथ लड़को', तथा धमवीर धूरा को 'पसीने को कमाई' आदि।

मध्यकालीन कहानी साहित्य को विशेषता यह रही कि स्थापित कहानीकारों को रचनाएं आई। सशक्त एवं बहमुखी प्रतिभावाले लेखक अभिमन्यु अनत जी का विशेष योगदान रहा क्योंकि कहानियों का शिल्प और गुणात्मकता को दृष्टि से समृद्ध कहानियाँ आई।

3. आधुनिक काल –

प्रथम चरण – (१९६८ से १९७६ तक)

मॉरिशसीय पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित कहानियाँ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियां म सन् १९६८ से १९७६ तक प्रथम चरण माना जाएगा। तत्कालीन परिस्थितियां राजनीतिक गमा-गर्मी गतिविधियां आदि कहानियां के विषय रहे। कहानियां के माध्यम से लेखकों ने राजनीतिक और एतिहासिक पहलूओं को आम जनता तक पहंचाने का प्रयास किया है। इस युग म 'अनुराग', 'दपण', 'आभा', 'प्रभात', जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से कहानियाँ प्रकाशित हई। दूसरी ओर 'हमारा देश', 'निमाण', 'रणभेरी', 'त्रिवेणी' जैसी पत्रिकाएं भी सामने आई। लेकिन इन पत्रिकाओं की समय अवधि अल्पकालीन रही। 'अनुराग' १९६०-६१ और १९६९ जुलाई से १९७७ की एक प्रकाशित कर के पुन: बंध हो गयी। फिर भी कहानियाँ प्रकाशित होती रही संकलनों म या संग्रहों म और कहानी साहित्य की यात्रा जारी रही।

भारतीय पत्रिकाओं म प्रकाशित कहानियाँ अभिमन्यु अनत की पचास से अधिक कहानियाँ भारत की विभिन्न पत्रिकाओं म आई । जैसे कि 'सरिता', 'धमयुग', 'आजकल', 'सारिका', 'कल्पना', 'नीहारिका', 'नवनीत', 'कहानी', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'कादम्बिनी', 'अनुराग', 'बाल भारती' आदि प्रकाशित हई। अभिमन्यु की प्रमुख रचनाएं- 'कोलाहल', 'द्विविधा', 'सोना', 'वापसी सूरज की', 'सुलह', 'पुनजन्म', 'तीसरे तट पर', 'कविता जो लिखी ना गयी', 'बादलों के बीच', 'अंधेरे म आदमी', 'माथे का टीका', 'वह जब लौटेगी सादगी म', 'नीम की छाया म लड़की', 'मुसाफिर', 'विभूति मॉरीशस की' आदि लोचन विदेशी की 'कनफेशन' सारिका(१९६९) सोमदत्त बखौरी की 'पतन' सारिका(१९६९)रामदेव धुरंधर जी की 'प्रतिफल' धमयुग(१९७३) 'सामयिक प्रहार' धमयुग(१९७४) 'उधर का रास्ता' आजकल(१९७३) 'बढ़ते हए' आजकल(१९७४) तथा सारिका(१९७६) म श्री पूजानंद नेमा की 'विकल्प' आदि।

स्वातंत्र्य पूव प्रथम कहानी संकलन 'नये अंकुर' १९६७ के प्रकाशन से सामूहिक कहानियों के संकलन की पृष्ठभूमि तैयार हई दो कहानी संकलनों म 'सुरभित उद्यान'(१९७३) तथा 'नन्ह दीप'(१९७४) का प्रकाशन हआ। 'सुरभित उद्यान' कहानी संकलन म सात कहानीकारों की कहानियाँ प्रकाशित हई। के.चिंतामणि की 'मृगकुंड', इंद्रदेव भोला 'इंद्र' की 'कुली' कृष्णलाल बिहारी की 'हाथ पांव बिक गये' सोनालाल नेमधारी की 'कैसी दिवाली' शोभना दशरथ की 'शहनाई' सत्यवान पिरथी की 'अनोखी यात्रा' तथा लात देव अंचराज की 'निराशा प्रेमी' आदि कहानियाँ संकलित है। पारिवारिक एवं प्रेम-विवाह की समस्याओं के साथ अभिव्यक्त हई है। लालकृष्ण बिहारी, चिंतामणि तथा सोनालाल नेमधारी की कहानियाँ आई. 'नन्हे दीप' (१९७४) इस कहानी और काव्य दो अलग-अलग खंड का चयन हआ था नरमदा धनुकचंद की 'प्रतीक्षा' देवप्रकाश पति की 'बेनाम दीपा' सुरेन्द्रनाथ गोपाल की 'याद म' मीता

दिगपाल को 'लीला को शांति' तथा यशवंत चूड़ामणि को 'फूटबाल को टीम' आदि कहानियों का संकलन हआ।

➢ **व्यक्तिगत कहानी संग्रह :-**

स्वातंत्र्योतर कहानी के प्रथम विकास चरण म ईश्वरदत्त अलिमन को (नई कहानियां) (१९६८)इस कहानी संग्रह म केवल तीन कहानियाँ प्रकाशित हई। 'सच्चा प्रेमी', 'आंख के अंधे गांठ के पूरे' और 'ईश्वर और अभागा' प्रकाशित हई। 'चिराग और तूफान'(१९७२) कहानी संग्रह प्रेमचंद भूली द्वारा प्रकाशित हआ। संग्रह म नौ कहानियाँ छपी 'अचरज', 'भाग्य', 'संयोग', 'जीत हार के बाद' तथा 'वह नागिन' आदि। सागर पार(१९७२) श्री दीपचंद बिहारी द्वारा कहानी संग्रह आता है. कुल सात कहानियाँ प्रकाशित हई। 'सागर पार, 'टेलीफोन', 'आदश', 'हथियार', 'छाया', 'वापसी', आदि। इनको कहानियों पर प्रेमचंद, शरतचंद, लोरस तथा मोपांसा का प्रभाव है। सुनीता आलियार को कहानी संग्रह 'दो शरीर एक आत्मा' (१९७३) आया | इस संग्रह म कुल 10 कहानियाँ आई 'दो शरीर एक आत्मा', 'दो सहेलियां', 'प्रभु का भोग्य', 'धोखा', 'भाग्यवान बालक', 'मोहब्बत को दास्तान', 'मेरी प्यारी भाभी विमला', 'पूजा के फूल', 'आत्मा को पुकार', 'अपना घर' आदि। 'परख' (१९७६) श्री ब्रजलाल रामदीन त्रिओले का कहानी संग्रह आया. कुल नौ कहानियाँ प्रकाशित हई. 'संदेह', 'चढ़ती उमर', 'स्नेह का भूखा', 'अर्थो', 'लाल चुनरी', 'घायल प्रेमी', 'सौदा', 'प्रतिशोध', 'परख' आदि।

सामूहिक और व्यक्तिगत कहानी संकलनों के अतिरिक्त स्वतंत्रता के बाद प्रथम चरण म श्री अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, लोचन विदेशी, मुनीश्वरलाल चिंतामणि , सोनालात नेमधारी, पुष्पा बुम्मा, ईश्वरसेन जागासिंह आदि को कहानियाँ भी पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित होती रही जिनम दपण, आभा, अनुराग, और प्रभात आदि प्रमुख पत्रिकाएं।

➢ **स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी –**

द्वितीय चरण – (१९७६ ई. से अब तक)

"मॉरीशस को हिन्दी-कहानी के द्वितीय चरण को कुछ अपनी अलग पहचान है, कुछ अलग भिन्नता है, कुछ अलग विशिष्टता है। यह भिन्नता विशिष्टता कथ्य और शिल्प, युग-बोध एवं भाव-बोध के स्तर पर पारिलक्षित होती है। कहानी विकास के द्वितीया चरण का काल-खंड अपना एक अलग महत्व रखता है। द्वितीय विश्व हिन्दी के लिए एतिहासिक कदम रहा"(६) सन१९७६ म अभिमन्यु अनत के दो कहानी संग्रह आए 'खामोशी के चित्कार' और 'इंसान और मशीन' इन दोनों कहानी संग्रहों का प्रकाशन महात्मा गांधी संस्थान, मोका मॉरीशस से हआ | व्यक्तिगत कहानी संग्रह

मॉरीशस म कथा सम्राट का सम्मान पाने वाले श्री अभिमन्यु अनत को ३०० जितनी कहानियाँ प्रकाशित हई है. जो पत्र-पत्रिकाओं के अंतगत आती थी।

कहानी संग्रहों म प्रमुख है-

१.) **खामोशी के चित्कार - (१९७६)** कहानी संग्रह म १३ कहानियाँ प्रकाशित हई 'माथे का टीका', 'खामोशी के चित्कार', 'स्वग के उसपार', 'वापसी सूरज को', 'कोलाहल' 'नयी तलाश', 'मुसाफिर',

'द्विविधा', 'अस्वीकार', 'जहर और दवा', 'धमाका', 'सुलह', 'रात की पार्टी के बाद आदि प्रमुख कहानियाँ प्रकाशित हुई. 'खामोशी के चित्कार' कहानी संग्रह में "मानव-जीवन से संबंधित विविध स्थितियों का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत हुआ है. कहानियाँ अंतर्द्वंद्व के माध्यम से जहां एक ओर भौतिक मूल्यों, आर्थिक विषमताओं एवं सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति प्रदान कर रही है, वहीं दूसरी ओर मनोविज्ञान के प्रमुख पहलू सेक्स की परितृप्ति को भी सहज ढ़ंग से व्यंजित कर रही है. इस पद्धति एवं प्रतीकों का आश्रय लिया गया है. और कहीं-कहीं खुल्लम खुल्ला उसका चित्रण हुआ है। अपेक्षित प्रभावात्मकता की वृद्धि के लिये कहानियों में बिम्बों के माध्यम से वातावरण को सजीव रूप से चित्रांकित किया गया है।"(७)

(२.) इंसान और मशीन : (१९७६)

अभिमन्यु अनत की लघुकथाओं का संग्रह है। कुल ४४ कथाएं है प्रमुख रूप से- मुट्ठी में उजाला, बड़ो से सीखा पाठ, धृतराष्ट्र और शकुनि के बीच, मंजिल के दो फासले, अपना रंग, नचिकेता, मोह, समय, परिणाम, प्रमाणपत्र, फार्मूला भगवान ज़िंदा है, सच्चाई, सूचना, सबसे बड़ा कौन, कीटाणु, नन्हे मछुवे का भाग्य, वह, मजबूर चूसी हुई ईख, भय की खोज, फैसला, दूध, इंसान और कुत्ता, कड़वाहट बीयर की, चारा, उद्घाटन, एकलव्य, भिखारी, जीवित मुर्दा, विदुर की साग, मशीन की मृत्यु, बन्दी, खिलौना, सिफारिश, अखबार, शकुंतला, प्रभाव, भीतर की बात, अपने लोग, रंग आदि। पौराणिक मिथकों के माध्यम से आधुनिक समाज की राजनीति का पर्दाफाश किया है।

(३.) वह बीच का आदमी : (१९८१)

इस कहानी संग्रह में कुल १८ कहानियाँ है। इस कहानी संग्रह में 'बादलों के बीच', 'अवलम्ब', 'बोझिल', 'पुनर्जन्म', 'बर्फ के भीतर गर्मी', 'जीत', आदि।

(४.) एक थाली समन्दर : (१९८७)

अभिमन्यु अनत की इस कहानी संग्रह में २४ कहानियाँ में प्रमुख है- 'नयी तलाश', 'आवाज', 'मान रक्षा', 'भीतर आना मना है', 'अंधेरे में आदमी', 'क्षितिज', 'मुट्ठी भर रेत', 'दिन हमारे नहीं', 'अस्वीकार', 'घटा टोप अंधेरा', 'अंधेरे उजाले के बीच', 'दो गलियों के बीच', 'नो वेकेंसी', 'निहत्था', 'मातम पुरसी' आदि कहानियाँ आई।

'अनुराग' पत्रिका अक्टूबर १९७५ में ३४ लेखकों की ६५ कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी थी। दीपचंद बिहारी अपने दो कहानी संग्रह में मॉरीशस के समाज की तस्वीर रखी है। १.) सागर पार २.) स्वर्ग में क्या रखा है

‘स्वग म क्या रखा है’ इस कहानी संग्रह म १२ कहानियाँ है- ‘हथियार’, ‘सागर पार’, ‘टेलीफोन’, ‘तानाशाह’, ‘काम,धाम और नाम’, ‘सुरंग’, ‘गुरूजी’, ‘८ साल के बाद’, ‘स्वग म क्या रखा है’, ‘बिगड़ा यंत्र’, ‘हंसते रहना’, ‘अंगारां का चट्टान’ आदि। ‘सुरंग’ कहानी म मनोविश्लेषणात्मक कहानी है। ‘गुरुजी कहानी म गिरमिटिया मजदूर के हो रहे अत्याचारां का कहानी को उजागर किया है।

➢ **<u>मॉरीशस के कहानी साहित्य म भानुमती का योगदान-</u>**

दो वरिष्ठ मॉरिशसीय सहित्यकार नागदान जी और नेमा जी हिन्दी जगत म अपनी रचनाओं के कारण अमर रहगे। भानुमती नागदान का जन्म १२ जुलाई १९३३ को रोज़हिल, मॉरीशस म हआ था। उनके पिता का नाम नारायणदास हवाभाई और माता का नाम धनदेवी मायाराम था। भानुमती नागदान गुजराती परिवार से आई है आपके घर म गुजराती बोलते थे लेकिन आप हिन्दी प्रेमी थी। “श्रीमती नागमती जी का लेखन प्रक्रिया तब शुरु हई जब प्रथम वार के लिए वरिष्ठ लेखक स्वर्गाय श्री सोमदत्त बखौरी जी ने रेडियो-एकांका प्रस्तुत करने का प्रेरणा दी। नागदान जी का कलम चल पड़ी और उन्हांने गुजराती भाषा म ‘बुढ़िया का शादी’ नामक एकांका लिखा। बाद म उनका हिंदी- रचना जख्म का चिन्ह प्रकाशित हई सन् १९८१ म ‘मिनिस्टर’ २००० म दरार और २००६ म अंग्रेजी भाषा म (dawn) डौन को प्रकाशित कर नागदान जी तीन कहानी संग्रहां का लेखिका के रूप म उभर आयी। नागदान जी बहमुखी प्रतिभा संपन्न कलाकार एवं समाज सेवी थी। वे मॉरिशसीय समाजां एवं संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी हई| सन१९७३ म हिंदी प्रचारिणी सभा ने उनके साहित्य सृजन के लिये ‘मंदोदरी भगत’ पुरस्कार से सम्मानित किया था। चौथे विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर १९९३ म उन्ह ‘साहित्य सम्मान’ २००३ म महात्मा गांधी संस्थान द्वारा सम्मान २००६ म ‘सर खैर जगतसिंह सम्मान’ दिए गए।“(८)

<u>भानुमती नागदान के दो कहानी संग्रह-</u>

१.) मिनिस्टर (१९८१)

२.) दरार (२००८)

‘मिनिस्टर’ चचित कहानी संग्रह है ‘अनुबंध’ कहानी सबसे सशक्त है। दूसरी कहानियाँ- दोस्ती, हड़ताल, समय का हाथ, एक घर, खिलौना आदि। ‘लह का घूंट’ कहानी म मॉरीशस म रहनेवाले भारतवंशी मजदूरां का यातना का कहानी है। ‘मिनिस्टर’ कहानी के संदभ म कहानी संग्रह का भूमिका म सोमदत्त बखौरी लिखते ह- “श्रीमती नागदान का मनपसंद विधा कहानी है। इस विधा के प्रति आप समपित है, इसीलिए कहानी कला म दिनां-दिन निखरती जा रही है। इस कला के माध्यम से आप अपने मन का बात को बहत ही सरल और सहज रीति से प्रकट कर देती है।“(९) ‘मिनिस्टर’ कहानी संग्रह म कुल १७ कहानियाँ है। ‘दूसरी दरार’ कहानी संग्रह म २६ लघु कहानियाँ प्रकाशित हई ह। ‘चेहरे पे चेहरा’, ‘गाड़ी का इज्जत’, ‘एक घर का सवाल’, ‘मोहरा’, ‘खिलौना’, ‘दोस्ती’, ‘नक्षत्र मिला दीजिए’, ‘कतव्य’, ‘हड़ताल’ आदि। महत्वपूण कहानियाँ प्रकाशित हई।

मॉरीशस के वरिष्ठ लेखकों म पूजानंद नेमा का नाम भी उल्लेखनीय है। उनके संदभ म प्रसिद्ध रचनाकार अभिमन्यु अनत ने कहा है- "हमारे देश के नवोदित हिन्दी कथाकारों म पूजानंद नेमा एक ऐसे हस्ताक्षर है| जिनका तेवर अपनी एक विशेष पहचान रखता है। सन१९४३ सन २०१४ तक सफर तय करने वाले लेखक श्री पूजानंद नेमा मॉरीशस की जमीन से जुड़े लेखक है। सन १९९२ म पूजानंद नेमा की कहानियों का संग्रह 'नया सफर' प्रकाशित हआ। इस संग्रह म १० कहानियाँ- 'पराजय', 'किल्लते', 'प्रतीक्षा', 'तलाश' 'वह चालु थी', 'अधुरा आदमी', 'आग और बाग', 'नया सफर सहने का', 'विकल्प और अंतिम दशन आदि। अभिमन्यु अनत पुस्तक की प्रस्तावना म लिखते ह- "सभी कहानियाँ मॉरीशस के उस विशेष प्रांत की है जो लेखक के अति निकट का है। अथात् उस अंचल की कहानियाँ है जिसके चप्पे-चप्पे पर कहानीकार जीता रहा है। एक कहानी अगर वहां की माटी की सौंधी गंध का एहसास कराती है तो दूसरी कहानी वहां के जन-जीवन का स्वरूप हमारे सामने प्रस्तुत करती है। कहानियों की भाषा भी इस सुवास से अछूती नहीं है। कथ्य के साथ शिल्प म भी मॉरिशसीय जन-जीवन की अभिव्यक्ति हई है। भाषा म स्थानीय रंग सवत्र छिटका है। शब्द-भंडार मुहावरों तथा भाव-संप्रेषण म साधारण जन की बोल-चाल की शक्ति है"। कहानियों का शिल्प विधान, भाषागत प्रवाह तथा शैलीगत सौंदय प्रभावशाली तथा सहज ग्राह्य भी है। कहानी के संदभ म लेखक का मानना है कि लेखन व्यक्तिगत प्रक्रिया है। किंतु एक सामाजिक काय है, और सामाजिक जिम्मेदारी भी है। भाषा शैली के संदभ म पूजानंद नेमा की सोच है कि नए विचार, नयी अनुभूतियाँ, चलती फिरती- शब्दावली और आकषक भाषा शैली ही पाठक को आकषित करती है। धम, संस्कृति एवं भाषापर मंडराते खतरे से समाज को बचाने का उत्तरदायित्व समझते थे। डॉ. कमल किशोर गोयनका जी अपने लेख म लिखते है। नेमा जी भारत और मॉरीशस की कहानियों की तुलना करते हए लिखा- "भारत की हिन्दी कहानी ने अपनी लम्बी यात्रा तय की है' सकड़ों अच्छी कहानियाँ आई है। जबकि मॉरीशस की हिन्दी कहानी की यात्रा लम्बी-चौड़ी नहीं ह परंतु यहां की कहानी अपनी पहचान एवं व्यक्तित्व बनाने म लगी है। तुलना बस इतनी है कि वहां अधिक कहानियाँ है, जबकि मॉरीशस म कम है। अंतर भौगोलिक और सामाजिक कारणों से है म नहीं चाहता कि मॉरीशस की कहानियाँ भारत की कहानियों से मिलती-जुलती हो, ढ़ांचा समान हो, यह स्वीकाय है, पर भीतरी बनावट या बुनावट निवाह अलग-अलग ही होना है। म तुलना म नहीं बल्कि तथ्यों के अनावरण एवं कलात्मक प्रस्तुति म अधिक ध्यान देता हँ"।(१०)

➢ सामूहिक संकलन म प्रकाशित कहानियाँ-

मॉरीशस और भारत के संपादको के द्वारा अनेक लेखकों की कहानियाँ संपादित की है- जैसे कि (१) अभिमन्यु अनत – मॉरीशस की हिन्दी कहानी १९७६, (२) अभिमन्यु अनत – वसंत पत्रिका, कहानी विशेषांक – १९७६, (३) कामता कमलेश मॉरीशस का कथा साहित्य – १९८२,(४) राजद्र अरुण - मॉरीशस की कहानियाँ– १९८७, (५) अभिमन्यु अनत – मॉरीशस की हिन्दी कहानियाँ– १९८७, (६) शशिप्रभा श्री वास्तव मॉरीशस की कहानियाँ– १९८९

➢ मॉरीशस की हिन्दी कहानी (१९७६) :-

अभिमन्यु अनत द्वारा संपादित 'मॉरीशस का हिन्दी कहानी' म १२ जितनी कहानियाँ प्रकाशित हई है। 'रामदेव धुरंधर' का कहानी 'अंधेरी सुरंग' कहानी पारिवारिक विडंबनाओं को प्रस्तुत करती है। भाषा शैली का दृष्टि से सशक्त कहानी कही जा सकती है। लाल कृष्ण बिहारी का 'ओवेर टाइम' म समाज का आथिक परिस्थितियाँ से जूझ रहे समाज के ऐसे वग कि कहानी है, शोषण का कहानी है। पुष्पा बुम्मा का 'ए.के.सीस' कहानी है। भानुमती नागदान का तरह समाज का व्यवस्था पर प्रहार करती दृष्टि होती है।

मोहन लाल दयाल का कहानी 'स्याही' म परिवहन का समस्या को बताया है दैनिक जीवन का परेशानियां और आथिक तंगी दोनों का ही चित्रण हआ है। महेश राम जियावन का 'तूफान के बाद' और हेमराज सुंदर का 'धुएं का उठती लकीर' डॉ. जागासिंह का कहानी 'हिन्दी अध्यापक' आई नारायण दत्त देसाई 'ट्यूशन फास' अध्यापक अपनी छोटी-सी तनख्वां म अपने परिवार का खुशियां नहीं ला सकता इसलिए उसे ट्यूशन करना पड़ता है। आस्तानंद सदासिंह का 'अंतिम मिनट', सोनालाल नेमधारी का कहानी 'पश्चाताप', इसके साथ-साथ भानुमती नागदान का 'अनुबंधन' और अभिमन्यु अनत का 'जहर और दवा' उल्लेखनीय कहानियाँ इस कहानी संकलन म आई।

- 'वसंत' पत्रिका म मॉरीशस का हिन्दी कहानी विशेषांक अंक १० म अभिमन्यु अनत द्वारा संपादित कुल १० कहानियाँ को शामिल किया गया है।
- **<u>'मॉरीशस का कथा-साहित्य – (१९८२)</u>**

इस कहानी के संकलन के संपादक कामता कमलेश जी है। इस संकलन म कुल २५ जितनी कहानियाँ आई। प्रमुख कहानियाँ इस प्रकार है। भानुमती नागदान का 'वह चेहरा', पुष्पा बुम्मा का 'रीते इंसान', 'जयतु जय हिन्दी' रानी रामसहाय ने लिखी।

रामदेव धुरंधर का 'दायरे के भीतर', पूजानंद नेमा का कहानी 'क्रिसमस' एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। 'सपने का स्वग' श्री कृष्णलाल बिहारी ने लिखी है। महेश रामजियावान का कहानी 'चक्कर' आत्मकथानक शैली म लिखी गई रचना है। सोनालाल नेमधारी का कहानी 'अशिष्ट' प्रेमी-प्रेमिका के मनमुटाव का कहानी को पत्रात्मक शैली का प्रयोग करके लिखा गया है। इंद्रदेव भोला इंद्र का 'धूप का छांह' कहानी के माध्यम से समाज म जाति और धम के भेद-भाव को दिखाया है। श्री आस्तानंद सदासिंह का 'हवा तीसरी दुनिया का', रघुनाथ दयाल का 'ततैया का छांह' म कहानी है। रोहित सिंह मुक्ताराम का कहानी 'अपराध का लकीर', श्री लोचन विदेशी का 'वहम' कहानी प्रकाशित हई। राजद्र काशी का कहानी 'आशा' ज्ञानी प्रभु का कहानी 'नीम का कहानी' भारद्वाज मंगलिया का कहानी 'वह इंसान' एक उपेक्षित कलाकार को जब सफलता मिलती वह कहानी है।

'वहम', 'परिक्रमा के बाद', 'वह चेहरा', 'दायरे के भीतर', 'गिरवी रखी आत्मा', आदि कहानियाँ शिल्प का दृष्टि से सशक्त कहानियाँ है।

- **<u>मॉरीशस का कहानियाँ(१९८६)</u>**

डॉ. राजद्र अरुण द्वारा संपादित ‘मॉरीशस को कहानियाँ(१९८६) इस संकलन म २८ कहानियाँ प्रकाशित हई है। मॉरीशस के इतिहास और उसके संघष और दद को बयां करती कहानियाँ है। श्री दिमलाला मोहित को कहानी ‘प्रिवेत को लकड़ी’ श्री वेणीमाधव रामखेलावन को कहानी ‘जय दुग’ डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि ने ‘कांटो पर चलते हए’ कहानी लिखी इस कहानी म अप्रवासी मजदूरों को चेतना को प्रकाशित किया है| जो अपने धम और भाषा को संरक्षित रख पाए। रामायण, हनुमान चालीसा, सत्यनारायण को कथा को ताकत पर सभी गिरमिटिया मजदूरों को एक साथ जोड़ने का काम किया और अपना जीवन व्यतीत किया। धमवीर धूरा को कहानी ‘चिल्लाहट’ श्री दानीश्वर शाम को कहानी ‘रामगुसाई को दास्ता’, ब्रजलाल रामदीन को कहानी ‘नवजागरण’ के माध्यम से गिरमिटिया मजदूरों म आई ‘नवजागरण’ को स्थिति को दशाया है। सुरेश सोमारु को ‘बाप का सपना’ श्री मोहनलाल ब्रजमोहन को ‘सिंदुर’ कहानी आत्मकथात्मक शैली म लिखी गयी है। अजय मंगरा को कहानी ‘विस्तृत समाधि’ आई। श्री लालमन बसराम को कहानी ‘पहली रात’, अनीता ओजायब को ‘म कौन हं’ श्री हरिनारयण को ‘मौसी’ भानुमती नागदान को कहानी ‘लह का घूंट’ म मजदूरों को यातना का वास्तविक चित्रण हआ है। आनंद देवी को ‘अतीत को गोद’, कृष्णलाल बिहारी को कहानी ‘क्रांति का सूरज’ आत्मकथात्मक शैली म प्रस्तुत हई इस संकलन को सभी कहानी मॉरीशस के दद भरे इतिहास को जीती हई लगती है।

- **<u>मॉरीशस को कहानियाँ(१९८७)</u>**

अभिमन्यु अनत के संपादन म ‘मॉरिशसीय हिंदी कहानियां’ प्रकाशित हई। कहानी संग्रह म १५ कहानियाँ आई। मॉरीशस म अभिमन्यु अनत के बाद दूसरे प्रसिद्ध कथाकार रामदेव धुरंधर है उनको ‘विषमंथन’, महेश रामजियावन को ‘चक्कर’, भानुमती नागदान को ‘एम.बी.ई’ दीपचंद बिहारी को ‘गुरुजी’ तथा अभिमन्यु अनत को ‘टूटा पहिया’ आदि कहानियाँ पहले भी आ चुको है। इसके अतिरिक्त साहेबा बीबी फज़ली को ‘मिन्नत’, डॉ. वीरसेन जागासिंह को ‘हिन्दी अध्यापक’, श्री पूजानंद नेमा को कहानी ‘वह चालू थी’, ‘कन्फेशन’ कहानी लोचन विदेशी को है। ‘कन्फेशन’ कहानी ‘सारिका’ म भी प्रकाशित हो चुको थी। सोनालाल नेमधारी को कहानी ‘समस्या’, पुष्पा बुम्मा को कहानी ‘फिसलन’ एक सामाजिक कहानी है। श्री जय जीउत को ‘चाहे-अनचाहे’ तथा डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि को ‘मौत का सौदागर’, पं. ठाकुरदत पांडेय को कहानी ‘बिछुरत एक प्राण हरि लेहों’ संस्मरणात्मक कहानी है।

- **<u>मॉरीशस को हिंदी कहानियाँ- (१९८९)</u>**

‘मॉरीशस को हिंदी कहानियां’ डॉ. शशिप्रभा श्री वास्तव द्वारा संकलित किया गया इन्होंने कहानियों को दो भागों म विभाजित कर दिया। सन् १९३७ से आठव दशक तक को कहानियाँ शामिल को है। अभिमन्यु अनत जी को ‘गोली को आवाज’ दीपचंद जी को कहानी ‘गुरुजी’, जयनारायण राय को ‘आनंद को ओर’ भानुमती नागदान को कहानी ‘दोस्ती’, सोनालाल नेमधारी को ‘समस्या’ महेश रामजियावन को ‘चक्कर’, अभिमन्यु अनत को ‘वह छाया नहीं थी’ आदि पहले भी दूसरे संकलन म छप चुको थी। रामदेव धुरंधर को कहानी ‘वषा पत्थरों को’ पूजानंद

नेमा की 'पराजय' और रघुनाथ दयाल की 'कैसी पुरवाई चली' द्वितीय चरण म भी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से कहानियाँ प्रकाशित हो रही थी।

रामदेव धुरंधर को बिड़ला फाउंडेशन ने एक कहानी संग्रह 'विष मंथन' नाम से प्रकाशित किया। 'विष मंथन' दूसरे कहानी संकलन म आ चुका है। रामदेव धुरंधर की कहानियाँ 'वसंत', 'आक्रोश', 'गगनांचल', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' आदि भारतीय पत्रिकाओं म भी प्रकाशित हो चुकी है। इस संकलन म प्रमुख कहानियाँ इस प्रकार है- 'विष मंथन', 'वह भी', 'उस पगडंडी पर', 'उधर का रास्ता', 'आदमखोर', 'बंद किनारा', 'उस गली के आगे', 'दिशाएं', 'पुनवास', 'सामयिक प्रहार', 'प्र[illegible]', '[illegible]', '[illegible]', 'जिन्दगी का बाकी [illegible]', 'अनाम रिश्तों के बीच', '[illegible]', [illegible] '[illegible]' [illegible]

'[illegible]' की कहानियों के संबंध म डॉ. [illegible] "[illegible] गहन अनुभूतियों का परिणाम है तथा मॉरीशस के व्यक्ति और समाज के अनेक यथाथ- परिदृश्य इनम विधमान है। प्रमुख रूप से ये कहानियाँ टूटते मानवीय रिश्तों, पतित एवं भ्रष्ट होते समाज, [illegible], प्रकृति एवं परम्परागत जीवन के विध्वंस की कहानियाँ है"[illegible] कथ्य और शिल्प दोनों की दृष्टि रामदेव धुरंधर की सशक्त कहानियाँ है लेखक की भाषा परिमाजित है सवश्रेष्ठ कहानियों म विष मंथन ही है कि आधुनिकता रूपी विष को मथ कर सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना कर[illegible]

- **<u>आधुनिकता युग म प्रकाशित महत्वपूण कहानी संग्रह –</u>**

  आधुनिक युग म कहानी संग्रह म राज हीरामन की तीन कहानी संग्रह प्रकाशित है. [illegible]

  राज हीरामन जी बफ सी गर्मी उनका तीसरा कहानी संग्रह है लेखक ने कविता और ले[illegible] इस कहानी संग्रह म दस कहानियां प्रकाशित हई है. हिरामन जी कहानियों म मानव मन की गहरी परख है.[illegible] की त्रासदियों से हआ मन कहानियों म द्रष्टिगत होता है.[illegible] कहानियों के कथ्य हम कहीं सोचने पर [illegible]: कवि की कहानियों म कविताओं की तरह भाषा मुहावरे दार और सजीव है.

  " मॉरिशस की हिंदी कहानी का इतिहास उपन्यास से भिन्न है. [illegible] कहानी के रूप म सूयप्रसाद मंगर भगत की कहानी '[illegible]' [illegible] 1934 [illegible] '[illegible]' पंडित तारकेश्वरनाथ चतुवदी की इन दो दिसंबर 1933 [illegible] '[illegible]' 1934 [illegible] कमल किशोर गोयंका साहित्य अकादमी नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2000 [illegible] 15 [illegible] 15) हिंदी कहानी म अभिमन्यु अनत के आगमन से पूव '[illegible]', '[illegible]' 'आय पत्रिका', '[illegible]', '[illegible]' [illegible] '[illegible]' हिंदी पत्रिकाओं म 30 [illegible] 50 [illegible]

प्रकाशित हो चुकी थी और हिंदी कहानी की बुनियाद पड़ गई थी. [illegible] प्र[illegible]. इनमे प्रमुख तहत समाज सुधार तथा सांस्कृतिक जागरण की प्रवृत्ति है और अंधविश्वासों, कुरीतियों विसंगतियों आदि की आलोचना है. [illegible], [illegible], वेश्यावृत्ति. [illegible] समाज तथा सनातन धम के मतभेद और निधन धनी का अंतर भारतीय प्रवासियों पर गोरों के. [illegible] आदि इन कहानियों के विषय ह मॉरिशस की हिंदी कहानी के इतिहास म स[illegible] 1960 [illegible]1968 [illegible]8 [illegible] बड़े महत्वपूण ह इस कालखंड म अभिमन्यु अनत जैसा सशक्त कहानीकार सामने आया और उनकी दस कहानियां भारत की हिंदी पत्रिकाओं म प्रकाशित हई और मॉरीशस का कोई कहानीकार पहली बार [illegible] 12 [illegible] 1968 [illegible] मॉरीशस स्वतंत्र हआ. [illegible] प्र[illegible] कहानी के साथ राजनीति ने एक नई इतिहास की सृष्टि की हिंदी कहानी को स्थायित्व मिला उसे व्यापकता एवं विस्तार मिला और लेखकों म कहानी रचना की प्रवृत्ति उत्पन्न हई. [illegible] उपरांत अनुराग दपण हमारा देश आभा ने सितारे त्रिवेणी निमाण पंकज वसंत आक्रोश स्वदेश इंद्रधनुष पंकज जनवाणी आदि हिंदी पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन हआ. इन्होंने हिंदी कहानी के विकास म [illegible].

मॉरिशस के हिंदी कहानीकारों ने अपने निजी कहानी संग्रह तो प्रकाशित कराए ही ह सामूहिक कहानी संग्र[illegible] प्र[illegible]. म ईश्वर गंगाराम का ‘[illegible]’ ईश्वर दत्त अली मनका ‘ [illegible] प्र[illegible] ‘[illegible]’ [illegible]‘स्वग म क्या रखा है’. [illegible] ‘[illegible]’ [illegible] ‘[illegible]’, ‘इंसान और मशीन व बीच का आदमी एक थाली समंदर अभिमन्यु की [illegible]व धुरंधर के बीच मंथन तथा कलयुग की कम कल योगी कम धम वीरसेन जागा सिंह के लाभों के बीच एवं त्रिकोण के बीच धमवीर अधूरा का मॉरिशस की कहानियां मोहनलाल बृजमोहन का आदम कद धोने बोनी नामधारी का पश्चाताप राज हीरामन के स्वघोषित आचाय एवं सेवा आश्रम सेवा आश्रम मुख्य है इन निजी एवं सामूहिक कहानी संकलन ओं म मर एसएसके समाज का व्यापक संसार है अभिमन्यु अनत [illegible]20 वर्षों का समय मॉरिशस की हिंदी कहानी का स्वण युग कहा जा सकता है.

:- संदभ ग्रंथ सूची -:

1. □□□□□ □ □□न्□□ □□□□त□ □□ □द्भ□ □□ □□□□□ : □□. श□□□□□ □□□□□□; Pg; 78
2. मॉरीशस को हिन्दी और उसके साहित्यकार (□.प्र.□□. □□□ प्र□□): □□.□□□□□□□ □□□□□□; Pg; 272,273
3. मॉरीशस को हिन्दी और उसके साहित्यकार (□.प्र.□□. □□□ प्र□□): □□.□□□□□□□ □□□□□□; Pg; 288
4. प्र□. □□□□□□□ष□□□□ : लेखक द्वारा साक्षत्कार: □□. 9-1-91
5. मॉरीशस म हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास : □□. श□□□□□ □□□□□□; Pg; 181
6. मॉरीशस म हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास : □□. श□□□□□ □□□□□□; Pg; 191
7. □□□□न्□□□□□ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व : □□. श□□□□□ □□□□□□; Pg; 109-110
8. □□□□□त्र□□ : □□□त□□ □□□□ □स□□□ (□□□□□) को पत्रिका : 133; □□□□□ 2015; Pg; 19
9. □□□; Pg; 29
10. □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□-प्रक्रि□□ : □□□□□त्र□□-133 : □□. □□□ □□□□□ □□□□□□ : Pg; 14-15
11. इन्द्रधनुष पत्रिका : □□□□□ □□□□ : □□. □□श्व□□□□ □□□□□□ : Pg; 16
12. □□.□□□ □□□□□ □□□□□□: प्रवासी साहित्य : □□□□□□□ □□□□ □:□□□□□ त्र□□□: □□□□ □□□□□: □□□□ ब□□□:□□ □□ल□□ :□ष्ठ:□□-□□